BA-(H)
पार्ट - द्व
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - तीन

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

प्रो० हरिमोहन झाक कथा-साहित्य:-

प्रो० हरिमोहन झा मैथिली कथा साहित्य मे हिनक अवदान अक्षुण्ण ओ अनुकरणीय रहल। 'प्रणम्य देवता' नामक कथा संग्रह 1945 ई० मे हुनका कथाकारक रूप मे प्रतिष्ठित कैलक। एकर बाद 1949 ई० मे 'रंगशाला' नामक दोसर कथा संग्रह बहराएल। 'खट्टरककाक तरंग' (1949) के कतिपय आलोचक कथाक श्रेणी मे राखैत छथि तऽ बहुतो एकरा स्वतंत्र विधा 'व्यंग्य' क कोटि मे। मुदा एहि पोथी मे कथा तत्वक प्रधानता अछि, अन्तु एहिठाम एकरा कथेक खाढ़ी मे राखल अछि। 'चर्चरी' (1960) ई० मे सेहो किछु कथा सभ संगृहीत अछि। 'एकादशी' (1981) सेहो एकटा विशिष्ट कथा संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त प्राय: नओटा कथा पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित तऽ भेल मुदा कोनो संग्रह नहि।

कथा लेखनक क्षेत्र मे अपन प्रवेशक सम्बन्ध मे प्रो० हरिमोहन झाक कहब छनि - "हमर कथा-साहित्यक दोसर मोड़ 'प्रणम्य देवता' सँ शुरू भेल। ओहि सँ पूर्व मैथिली मे जे कथा बहराएल छलैक से अधिकतर

संयोग वा वियोगक कथा होइत छलैक। गल्प मुख्यतः शृंगार वा करुण रसक प्रधानता लेने होइत छलैक। प्रणम्य देवता आनन्द देवताक जकाँ जनप्रियताहि प्रसिद्ध आ उत्साह हिनक लोकप्रियताक अन्दाज एहीसँ लैतल जे जतेको ग्राहक कें जतेक एकर प्रति दोकान मे नहि भेटैनह आ प्रेसक दफ्तरीखाना मे बैसि, अपना सामने जिल्द बनाय, जेना कोनो अपूर्व संदेश गामपर लेने जा रहल होथि। कोनो भाषा मे जतेक नवीन साहित्यक भूख जागृत होइ छैक तइ एहिना होइत छैक। इतिहासकार डॉ० दिनेश कुमार झाक, प्रो० झा कें अपना तरहक एकमात्र कथाकार रूपमे रेखांकित करैत छथि - "मैथिली कथा मे हास्य-व्यंग्य तत्त्व उपस्थित करनिहार कथाकार लोकनिक मध्य प्रो० हरिमोहन झाक नाम प्रथम एवं अन्तिम रहल।"

'खट्टर ककाक तरंग' कृतिक संदर्भ मे डॉ० भीमनाथ झाक कहब छनि जे "एहि प्रकारक रचना कोनो आन भारतीय साहित्य मे प्रायः नहि अछि।"

हिनक प्रसिद्ध कथा मे बिकट पाहुन, ओंगरेजिया बाबू, टोटमा, कन्याक जीवन, ग्रेजुएट पुतोहु, पाँच पत्र, बाबाक संस्कार, दही-चूड़ा चीनी आदि चर्चा होइत अछि। उपर्युक्त कथा सहित प्रायः पचासटा हिनक कथा भाषान्तर भइ अन्यान्य भाषाभाषी कें मैथिली कथाक रसास्वादन करौलक अछि।

Ranjit Kumar
07/08/20